ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-5 अंक : 59
सहयोग शुल्क : रु. 1 / नवंबर : 2021

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांग जनों को सहानुभूति की नहीं,
साथ की जरूरत होती है...
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांगों को हमेशा साथ और सम्मान दें...
- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

आप सभी को दीपावली की ढेर सारी शुभकामनाएं

जो अपनी राह से भटकते है,
वो अपना सफर मुश्किल बनाते है ।
जो अपनी जिद पें अडते है,
वो अपने सफर में मंजील को पाते है ।

इस छोटी सी पंक्तियां हमे जीवन जीना सिखाती है । कुछ हटके करो, खुद को बदलो, खुद को बदलना थोडा सा मुश्किल जरुर होता है, मगर नामुमकीन नही । हर व्यक्ति में किसी ना किसी कमि और कोई ना कोई खूबी भी होती ही है । बस हमें हमारी कमीयों को नजरअंदाज करके अपनी खुबीओ को देखना है । खुबीओ को संवारने की और आगे बढना है । सिर्फ कमीयों पर ही देखते रहेंगे, सोचते रहेंगे तो एक दिन हम मायुस हो जायेंगे इसलिए जिंदगी में हमे मायुस नही होना है लक्ष्य को पाना है और इसके लिए जरुरी होता है बुलंद होंसला, एक जूनुन, एक जिद ।

हमे बस ये कमियां और खुबीयां के बीच का फासला ही तय करना है । इस विश्व में कई ऐसे लोग है जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और जुनुन से अकेले मुश्किलों के बीच भी सफलता प्राप्त की है । अपने लक्ष्य को पाया है और अपना और देश का नाम रोशन कीया है । हम भी सबकुछ कर सकते है जो कुछ हम चाहते है । बस सकारात्मक सोच के साथ आगे बढते रहीए ।

आप सभी को निवेदन है की "दिव्ययांग सेतु" पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनो के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम या कोई दिव्यांग व्यक्ति की जानकारी का ब्योरा भी आप हमें भेज सकते है । हम इसे प्रकाशित करेंगे ।

आओ आप भी दिव्यांगजनो के इस सेवायज्ञ में हमारा साथ दें...

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

नवंबर - 2021, पृष्ठ संख्या - 16
वर्ष - 5 अंक - 59

प्रेरणास्त्रोत और संपादक
संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक
मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र
सेवा समर्पण फाउण्डेशन
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)
Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad
०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,
नया विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००९
(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक
प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.
आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6
Phone : 079 26405200

दिव्यांग बच्चों को मिलेगा स्टेशनरी, यूनीफोर्फ़म भत्ता

सरकार की और से दिव्यांग बच्चों के कल्याण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं । राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को ब्रेल लिपि की स्टेशनरी, यूनिफार्म एवं ट्रांसपोर्ट भत्ता दिया जाएगा । इसके लिए राजकीय एवं एडेड माध्यमिक विद्यालयों से एसे बच्चों की सूची मांगी गई है ।

विद्यालय तक दिव्यांग बच्चों की पहुंच सुनिश्चित करने तथा उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल कराने को लेकर सरकार की ओर से तमाम जतन किए जा रहे हैं । राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत इनक्लूसिव एजुकेशन फोर डिसेबल्ड एट सेकेंड्री स्टेज (आईईडीएसएस) योजना में चाइल्ड विद स्पेशल नीड (विशेष आवश्यकता वाले) बच्चों को ब्रेल लिपि स्टेशनरी के लिए आठ सौ एवं यूनिफार्म मदद में छह सौ रुपये भत्ता दिया जाएगा ।

इसी तरह इन बच्चों की दिव्यांगता के आधार पर रीडर और ट्रांसपोर्ट के लिए निर्धारित भत्ता दिया जाएगा । राजकीय और एडेड माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा नौ से बारह तक की विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को यह सुविधा मिलेगी । इस संबंध में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के सहायक एवं एडेड माध्यमिक विद्यालयों से एसे छात्रों की सूची मांगी गई है ।

विद्यालयों की ओर से सूची उपलब्ध कराई जा रही है । विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सूची राज्य परियोजना कार्यालय को भेज दी जाएगी । इसके बाद इन छात्रों के खाते में निर्धारित धनराशि भेज दी जाएगी ।

दिव्यांग छात्रों को बड़ी राहत - दिव्यांग छात्रों अब दूसरों से पेपर लिखवा सकेंगे

प्रदेश विश्वविद्यालय में पढने वाले छात्रों के लिए राहत भरी खबर है । अब परीक्षाओं के लिए छात्रों को दर-दर नहीं भटकना पड़ेगा । यूजीसी और राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए पात्र दिव्यांग विद्यार्थी किसी भी शैक्षणिक योग्यता वाले व्यक्ति को अपना राइटर बना सकते हैं । एचपीयू ने इस बाबत आदेश जारी कर दिए है । बता दें कि अकसर विवि या दूसरे संस्थानों में पढने वाले छात्रों को राइटर न मिलने की वजह से खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था । खास बात तो यह है कि अपनी मर्जी से किसी को भी दिव्यांग छात्र परीक्षा में राइटर के तौर पर ला सकते है । हांलाकि इसके लिए उन्हें एग्जाम से पहले अपने राइटर की जानकारी देना जरुरी होगा ।

हालांकि विवि ने यह विकल्प भी रखा है कि अगर किसी के पास राइटर नहीं होगा, तो वो भी उपलब्ध करवाएंगे । बता दे कि दिव्यांग विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के होस्टल से कैंपस तक लाने और वापस छोडने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है । इसके अलावा विश्वविद्यालय की बस सेवा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क है । विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को राज्य सरकार के माध्यम से छात्रवृत्ति भी दी जाती है । जानकारी के अनुसार विश्वविद्यालय में दिव्यांगों को बाधारहित बनाने के लिए पांच करोड़ की लागत से कार्य चल रहे हैं । अहम यह है कि प्रोजेक्ट के पहले चरण में लिफ्ट बन चुकी है । लिफ्ट और कई रैंप बनाने का काम जोरों पर चल रहा है । कुछ शौचालयों को भी बाधा रहित बनाया जा रहा है । प्रोजेक्ट के दूसरे चरण में नए लिफ्ट और रैंप पर काम किया जाएगा । बता दे कि एचपीयू में द्रष्टिबाधित छात्रों के लिए लाईब्रेरी बनाई गई है । इसके

१७ कंप्यूटरों में विभिन्न प्रकार के टोकिंग सोफ्टवेयर तैयार किए गए है । जिनके जरिए द्रष्टिबाधित विद्यार्थी सुनकर ओनलाइन एवं प्रिंटेड पुस्तकें पढ़ते हैं । बता दें कि उच्च शिक्षा प्राप्त करना द्रष्टिबाधित एवं अन्य दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कोई सपना नहीं है । विश्वविद्यालय की ओर से इस दिशा में शुरु किए गए विशेष प्रयासों के परिणाम देखने को मिल रहे हैं । अब देखना यह होगा कि आगामी समय में द्रष्टिबाधितों के लिए सरकार क्या करती है । विश्वविद्यालय में पहली बार बड़ी संख्या में विद्यार्थी नि-शुल्क पढ़ाई कर रहे हैं । वर्तमान समय में विश्वविद्यालय में १५ विद्यार्थी पीएचडी कर रहे हैं । अनेक ने जेआर एफ, नेट और सेट की परीक्षा पास की है ।

अब दिव्यांग नही भीगेंगे बारिश में, बनाई ऐसी बैसाखी जिसमे जुड़ा हैं छाता, मोबाइल ग्रिपर

मेहुल सिंह को मिला राष्ट्रीय इंस्पायर अवार्ड, जापान जाएगा

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से राष्ट्रीय इंस्पायर अवार्ड-२०१९-२० के लिए जिले से पहली बार एक छात्र मेहुलसिंह का चयन हुआ है। मेहुलसिंह झंझुनूं के सीतसर रोड स्थित डूंडलोद पब्लिक स्कूल का छात्र है। इस अवार्ड के लिए देश भर के कुल ६० बाल वैज्ञानिक चुने गए हैं। इनमें प्रदेश के तीन छात्र शामिल हैं। मेहुल के अलावा प्रदेश से सीकर जिले की राजकीय आदर्श सीनियर सैकंडरी स्कूल जैतुसर की छात्रा निकिता वर्मा और हनुमागढ़ की नेहरु मोडल सीनियर सैकंडरी स्कूल को आफरीन शामिल हैं।

कालीपहाड़ी निवासी मेहुल ने दिव्यांग लोगों के लिए एक एसी वैशाखी का मोडल तैयार किया था। जिसमें छाता, मोबाइल ग्रिपर, टोर्च पावर बैंक भी लगाया गया था। ताकि दोनों हाथों से वैशाखी लेकर चलने वाले दिव्यांगों को कोई

वोइस टू दिव्यांग

परेशानी ना हो । राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए जनवरी २०१९ में प्रदेश से १८ बाल वैज्ञानिकों का चयन हुआ था । जिनमें सबसे ज्यादा सात बाल वैज्ञानिक झंझुनूं जिले के थे ।

इनमें से अब तीन बाल वैज्ञानिक का चयन जापान यात्रा के लिए हुआ है । जहां इन्हें चुनिंदा वैज्ञानिकों से मिलने और उनसे सीखने का मौका भी मिलेगा । डीईओ अमरसिंह पचार ने बताया कि यह जिले के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है । स्कूल के सचिव बीएल रणवा व प्रिंसिपल सतबीसिंह ने कहा इससे अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिलेगी ।

टैक्नोलोजी से लोगों की लाइफ आसान बने

मैं सितंबर २०१८ में पापा बलवीरसिंह (हैल्थ कोच) के साथ रेलवे स्टेशन पर बैठा था । बारिश हो रही थी । मैंने देखा कि एक दिव्यांग दोनों हाथों में बैशाखी लिए हुए चलता आ रहा था । उसने दोनों हाथों से बैशाखीयां पकड़ रखी थी । छाता नहीं पकड़ सकता था और बारिश में भीग गया । उसकी परेशानी देख मुझे लगा कि कुछ करना चाहिए । मैंने बैशाखी के साथ छाते को जोड़ने का प्लान बनाया ।

इसी दौरान ईस्पायर अवार्ड की घोषणा हुई तो मैंने उसके लिए अपना आइडिया भेजा । इसमें मेरी बड़ी बहन साइंस टीचर अंकिता शेखावत ने मदद की । हमने बैशाखी में छाते के साथ टार्च और घंटी लगाई । यह आइडिया स्टेट लेवल पर चुना गया । इसके बाद नेशनल स्तर पर इसमें और सुधार कर पावर बैंक, मोबाइल ग्रिपर और फोर्डबेल चेयर भी जोड़ दी । मेरा मकसद है कि साइंस और टैक्नोलोजी का उपयोग लाइफ को आसान बनाने में किया जाए ।

सरकारी सेवा में प्रवेश के बाद दिव्यांगता से ग्रस्त होने वाले व्यक्तियों को भी आरक्षण का लाभ

भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के द्वारा कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा स्पष्टीकरण मांगे गए थे कि क्या किसी ऐसे व्यक्ति जो सरकारी सेवा में प्रवेश के बाद दिव्यांगता से ग्रस्त हो जाता है, उन्हे आरक्षण का लाभ दिया जा सकता है अथवा नहीं।

इसके बाद विभाग ने अपने कार्यालय ज्ञापन एफ संख्या 36035/3 /2009 स्था. (आरक्षण), नई दिल्ली दिनांक 10 जून 2009 जारी कर स्पष्ट किया है कि विभाग सेवा में आने से पहले दिव्यांगता से ग्रस्त हुए व्यक्ति और सेवा में आने के बाद

दिव्यांगता से ग्रस्त हुए व्यक्ति में कोई भेदभाव नहीं करता । यदि कोई कर्मचारी सेवा में आने के बाद दिव्यांग हो जाता है, तो उन्हें उस तारीख से दिव्यांगता से ग्रस्त व्यक्ति के रुप में आरक्षण का लाभ मिलेगा जिस तारीख से वह दिव्यांगता संबंधी अपना वैध प्रमाण पत्र प्रस्तुत करता है ।

यहां स्पष्ट है कि आरक्षण का लाभ सरकारी सेवा में प्रवेश के बाद दिव्यांगता से ग्रस्त कर्मचारियों के साथ-साथ उन दिव्यांग कर्मचारियों को भी मिल सकेगी जिनकी नियुक्ति दिव्यांगता कोटे पर नहीं हुई है ।

इस ज्ञापन में सभी मंत्रालयों विभागों इत्यादि से अनुरोध किया गया है कि उपर्युक्त ज्ञापन की विषय वस्तु के बारे में अपने नियंत्रण वाले सभी स्थापनाओं /एस्टेब्लिशमेंट को सूचना प्रदान करें ।

Image credit: http://shd.legal/workplace-investigations/

वोइस टू दिव्यांग

सियाचिन पर दिव्यांगों ने दिखाया दम - बन गया विश्व रिकॉर्ड
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया यह देश के लिए प्रेरणा

दिव्यांग जनों ने 11सितंबर को सियाचिन ग्लेशियन में 'कुमार पोस्ट' पर चढ़ाई करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। यह चोटी 15,000 फीर से ज्यादा ऊंची है और दुनिया में एक साथ इतने दिव्यांग जनों का यह पहला सफल पर्वतारोहण अभियान है। अमेरिकी दौरा से लौटने के बाद आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में इस अभियान दल की सफलता की तारीफ की है और इसे पूरे देश के लिए प्रेरणा बताया है। गौरतलब है कि भारतीय सेना भी सदस्य दल में शामिल दिव्यांगों के हौसले, शारीरिक मजबूती और मानसिक ताकत पर हैरानी जता चुकी है।

हर देशवासी के लिए गर्व की बात-पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में उन 8 दिव्यांगजनों की सफलता को पूरे देश के लिए प्रेरणा बताया है, जिन्होंने सितंबर में सियाचिन ग्लेशियर में 15,000 फीट ऊंची 'कुमार पोस्ट' को फतह किया है। पीएम मोदी ने कहा हैं कि सियाचिन ग्लेशियर में कितनी भयानक ठंड होती है, जहां टिकना आम इंसान के वश की बात नहीं होती। तापमान माइनस 60 डिग्री से भी नीचे तक चला जाता है, लेकिन ऐसी जगह पर देश के 8 दिव्यांग जनों ने जो कामयाबी हासिल की है पूरे देश के लिए गर्व करने वाली बात है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है, 'सियाचिन' के दुर्गम इलाके में 8 दिव्यांग जनों की टीम ने जो कमाल कर दिखाया है वो हर देशवासी के लिए गर्व की बात है। इस टीम ने सियाचिन ग्लेशियर की 15 हजार फीट से भी ज्यादा की ऊंचाई पर स्थित 'कुमार पोस्ट' पर अपना परचम लहराकर वर्ल्ड रिकोर्ड बना दिया है। शरीर की चुनौतियों के बावजूद भी हमारे इन दिव्यांगों ने जो कारनामा कर दिखाया है वो पूरे देश के लिए प्रेरणा है।

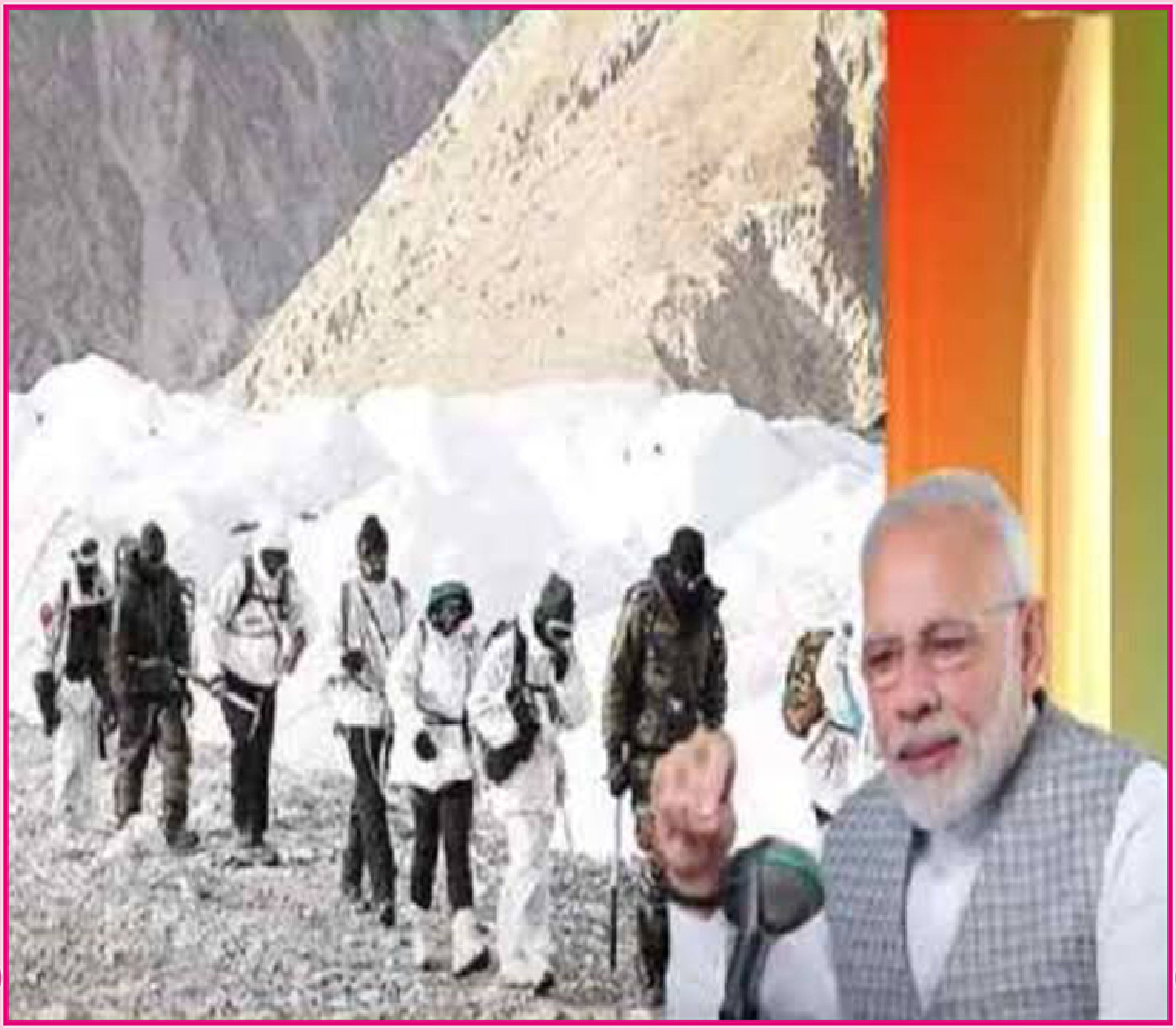

छत्तीसगढ़ के दिव्यांग पर्वतारोही चित्रसेन ने यूरोप की सबसे ऊंची चोटी पर फहराया तिरंगा

छत्तीसगढ़ के दिव्यांग पर्वतारोही चित्रसेन साहू ने 23 अगस्त को यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी पर तिरंगा झंडा फहराकर इतिहास रच दिया। चित्रसेन ने खराब मौसम के बावजूद कृत्रिम पैरों के सहारे यूरोप की सबसे ऊंची चोटी चढ़ने की सफलता हासिल की

खराब मौसम भी नहीं रोक सके छत्तीसगढ़ के पर्वतारोही के कदम। कृत्रिम पैरों के सहारे माउंट एलब्रुस चोटी को किया फतह। रायपुर, छत्तीसगढ़ के दिव्यांग पर्वतारोही चित्रसेन साहू ने 23 अगस्त को यूरोप महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी पर तिरंगा झंडा फहराकर इतिहास रच दिया। चित्रसेन ने खराब मौसम के बावजूद कृत्रिम पैरों के सहारे यूरोप की सबसे ऊंची चोटी चढने की सफलता हासिल की। उसने -25 डिग्री सेल्सियस शरीर जमा देने वाली ठंड और 50-70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही बर्फीले तूफान का सामना करते हुए 23अगस्त की सुबह 10.54 बजे 5400 मीटर ऊंची माउंट एलब्रुस चोटी को फतह कर लिया। हालाकि चोटी में चढ़ते समय चित्रसेन के पैर में चोट भी लग गई और उसका चलना मुश्किल हो गया। इसके बावजूद उसने हार नहीं मानी और माउंट एलब्रुस चोटी का चढ़कर छत्तीसदढ़ को गौरवान्वित किया।

अब चौथे चोटी में चढने की करेंगे तैयारी

चित्रसेन ने माउंट एलब्रुस चोटी चढ़कर तीसरे महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी चढने का गौरव हासिल कर लिया। अब वे सात में से चौथे महाद्विप की चोटी में चढने का सफर शुरु करेंगे। चित्रसेन ने माउंट एलब्रुस चढ़ाई 17 अगस्त को शुरु की थी। हर एक दिव्यांग

वोइस टू दिव्यांग

30 साल के स्वास्तिक ने तैयार की पहली स्वदेशी मोटर व्हीलचेयर, जो बाइक की तरह सड़कों पर दौड़ेगी

खुले आसमान के नीचे, सड़कों पर, तंग गलियों में, खेतों में, बाजारों में बेफिक्री से बिना किसी मदद के घूमना भी एक तरह की आजादी है । ये आजादी उन दिव्यांगों यानी हैंडीकैप्ड लोगों के लिए किसी और पर निर्भर होना पड़ता है । एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में तकरीबन 3लाख व्हीलचेयर हर साल बिकती हैं । इसमें से 2.5 लाख यानी दो तिहाई इम्पोर्ट की जाती हैं । इनमें से 95% व्हीलचेयर एक ही साइज की होती हैं, जो सभी के लिए कंफर्टेबल भी नहीं होतीं ।

ऐसे लोगों की तकलीफ को देखते हुए IIT मद्रास से पास ओउट स्वास्तिक सौरव दास और उनकी प्रोफेसर सुजाता श्रीनिवासन की टीम ने एक पहल की है । ये लोग अपने एक नए स्टार्टअप 'निओमोशन' के तहत पर्सनलाइज्ड व्हीलचेयर बना रहे हैं, जिसकी मदद से कोई भी हैंडीकैप्ड अपने हिसाब से व्हीलचेयर तैयार करवा सकते हैं ।

बिजली से चार्ज होने वाली यह व्हीलचेयर देश की पहली स्वदेशी मोटर व्हीलचेयर है । यह किसी भी तरह की सड़कों पर यहां तक कि ऊबड़-खाबड़ जमीन पर भी चल सकती है । इसकी स्पीड 25 किमी प्रति घंटा होगी । अभी तक देशभर में 600 से ज्यादा लोगों को व्हीलचेयर बेच चुके हैं । तकरीबन 150 जरुरतमंद लोगों को इन लोगों ने फ्री में भी व्हीलचेयर दी है ।

सामाजिक बदलाव के मकसद से रिसर्च करना शुरु किया

30 साल के स्वास्तिक सौरव दास ओडिशा के रहने वाले हैं । इन्होंने ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई IIT मद्रास से की है । शुरु से ही स्वास्तिक सामाजिक बदलाव के लिए काम करना चाहते थे । फाइनल ईयर में इन्हें रिहैबिलिटेशन रिसर्च डिजाइन एंड डिसेबिलिटी सेंटर, IIT मद्रास में अपनी प्रोफेसर के अंडर रिसर्च करने का मौका मिला । रिसर्च के दौरान वे भारत के 40 शहरों में तकरीबन 200 हैंडीकैप्ड लोगों से मिले जो व्हीलचेयर का इस्तेमाल करते थे ।

उन लोगों ने बताया कि मार्केट में मिलने वाली ज्यादातर व्हीलचेयर एक ही साइज की होती हैं, जो सभी को फिट नहीं आतीं । लंबे समय तक इस्तेमाल करने के बाद दूसरी शारीरिक परेशानियां होने लगती हैं । स्वास्तिक कहते हैं कि लोगों से मिलने के बाद मुझे उनकी असली दिक्कतों के बारे में पता चला । लोगों ने बताया कि ज्यादा समय बैठने पर कमर, पीठ और कंधे में दर्द होने लगता है । वहीं दूसरी तरफ दूर जाने के लिए व्हीलचेयर काम नहीं आतीं, दूसरों पर निर्भर रहना ही पड़ता है ।

हैंडीकैप्ड्स की दिक्कतों को जानने के बाद स्वास्तिक को पर्सनलाइज्ड व्हीलचेयर बनाने का आइडिया आया । पढ़ाई पूरी होने के बाद 5 साल तक रिसर्च किया । इसके बाद उन्होंने अपनी प्रोफेसर सुजाता श्रीनिवासन से मिलकर 2020 में स्टार्टअप की शुरुआत की ।

स्वास्तिक की टीम ने 150 से ज्यादा लोगों को मुफ्त में व्हीलचेयर दी है । वे अपने इनोवेशन के जरिए ज्यादा से ज्यादा लोगों की मदद करना चाहते हैं ।

निओमोशन के तहत पर्सनलाइज्ड व्हीलचेयर फिलहाल दो तरह की हैं। एक नियोफ्लाई और दूसरी निओबोल्ट। नियोफ्लाई टाइप में व्हीलचेयर को हेल्थ और लाइफस्टाइल के मुताबिक 18 तरीकों से मॉडिफाई किया जा सकता है। जबकि निओबोल्ट वाली व्हीलचेयर में अलग से एक मोटर लगाई गई है। इसकी मदद से इसे एक स्कूटर में बदला जा सकता है। मोटराइज्ड व्हीलचेयर को एक बार चार्ज करने पर 25 किलोमीटर तक का सफर किया जा सकता है।

इतना ही नहीं इसमें सेफ्टी फीचर्स जैसे ब्रेक, हॉर्न, लाइट और मिरर भी लगे हैं। इसकी मदद से ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर, खेतों में, सडकों और फ्लाई ओवर तक भी आसानी से सफर किया जा सकता है। असके साथ ही इसे पार्क करने में दिक्कत नहीं है। ये कहीं भी आसानी से पार्क की जा सकती है।

स्वास्तिक बताते हैं कि निओमोशन स्टार्टअप के पीछे हमारा मकसद व्हीलचेयर यूजर को स्वतंत्र बनाना है। 4 दीवारी से निकल वे भी आम लोगों की तरह बाहर जा सकें, अपने सभी छोटे-बड़े काम खुद ही करे सकें।

डिमांड के मुताबिक कस्टमाइज्ड व्हीलचेयर तैयार की जाती हैं

इस व्हीलचेयर के जरिए ऊंची पहाड़ियों पर भी हैंडीकैप्ड जा सकते हैं। उन्हें कोई परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी।

स्वस्तिक बतातें हैं कि उनका मदकद ही लोगों की लाइफ को आसान बनाना है। इसलिए उन्होंने अपनी टीम में फिजियोथेरेपिस्ट की एक खास टीम रखी है। जो ऑर्डर मिलने के बाद कस्टमर्स को वीडियो कॉल करते हैं। उनसे उनकी जरुरतों को समझते हैं। उनका फिजिकल असेसमेंट करते हैं। इसके बाद उनके हिसाब से कस्टमाइज्ड व्हीलचेयर तैयार करते हैं।

मार्केटिंग को लेकर वे बताते हैं कि हम लोग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही लेवल पर मार्केटिंग कर रहे हैं। हमने कई अस्पतालों से टाइअप किया है, जहां हमारे प्रोडक्ट की सप्लाई होती है। इसके साथ ही देश के कई शहरों में हमारे रिटेलर्स हैं, जो हमारे प्रोडक्ट की मार्केटिंग करते हैं। ऑनलाइन मार्केटिंग के लिए हमारी वेबसाइट और सोशल मीडिया है, जहां से लोग अपने मन मुताबिक व्हीलचेयर का ऑर्डर कर सकते हैं। हम उनके पते पर कम से कम वक्त में प्रोडक्ट की डिलीवरी कर देते हैं।

वे बताते हैं कि नियोफ्लाई व्हीलचेयर की कीमत 39,900 रुपए है और नियोबोल्ट मोटराइज्ड व्हीलचेयर 55,000 रुपए में उपलब्ध है। इसके साथ ही हम आसान EMI का विकल्प भी देते हैं। हमारी वेबसाइट पर एक हजार रुपए का पेमेंट करके इसका ऑर्डर प्री-बुक किया जा सकता है।

तस्वीर में एक युवक व्हीलचेयर पर बैठकर क्रिकेट खेल रहा है। इससे समझा जा सकता है कि इसे चलाने के लिए किसी की जरुरत नहीं पड़ती है।

वे बताते हैं कि 2025 तक हमारा टारगेट एक लाख लोगों तक पहुंचने का है। जल्द ही भारत के बाहर भी हम अपने प्रोडक्ट की मार्केटिंग करने वाले हैं। कई देशों से लोग इसको लेकर दिलचस्पी दिखा रहे हैं। फंडिंग को लेकर स्वास्तिक बताते हैं कि भारत सरकार और कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (CSR) की तरफ से उन्हें मदद मिली है। इसके अलावा दोनों पार्टनर्स ने भी अपनी सेविंग इन्वेस्ट की है।

जरुरतमंद लोगों को मुफ्त में प्रोवाइड कराते हैं

आर्थिक रुप से कमजोर लोगों की मदद करने के लिए एक प्रावधान रखा गया है। स्वास्तिक बताते हैं आमतौर पर मिलनी वाली व्हीलचेयर के मुकाबले निओमोशन व्हीलचेयर्स महंगी हैं। जरुरतमंद लोगों की मदद करने के लिए हमारी टीम एसे लोगों का एक डेटाबेस तैयार करती है। उनके लिए हम स्पॉन्सर ढूंढते हैं, कई बार स्पॉन्सर खुद ही डोनेशन के लिए आगे आते हैं। इस तरह से हम जरुरतमंदों को फ्री में व्हीलचेयर देते हैं। अब तक 150 से ज्यादा व्हीलचेयर हम मुफ्त में बांट चुके हैं। आगे हम इसकी संख्या और भी तेजी से बढ़ाने वाले हैं।

Contact No. :- 9790951730

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर